B.A. Part I (H) I

Paper II

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistent Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Raj Nagar

तीन स्तरों का नियम (अगस्त कॉम्टे) - समाजशास्त्र के पिता अगस्त कॉम्टे ने तीन स्तरों के नियम को प्रतिपादित किया। तीन अवस्थाओं के नियम के द्वारा कॉम्टे ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि मानव के बौद्धिक विकास अर्थात् मानवीय मस्तिष्क का विकास तीन अवस्थाओं से होकर गुजरता है। 'पॉलिटिक्स पॉजिटिव' में कॉम्टे ने तीन स्तरों के नियम की चर्चा करते हुए लिखा है," हमारे ज्ञान की प्रत्येक तीन विभिन्न सैद्धान्तिक अवस्थाओं से होकर गुजरती है जिन्हें हम आध्यात्मिक अवस्था, अधितात्विक अवस्था एवं प्रत्यक्षवादी अवस्था कह सकते हैं। तीन अवस्थाओं के नियम के अनुसार समाज प्राथमिक (आदिम) धर्मों से उच्चतर दार्शनिक आदर्शवाद तथा अन्तत: आधुनिक वैज्ञानिक मान्यताओं (प्रभावों की प्रत्यक्ष पहचान) से होकर गुजरता है।

II

(1) धार्मिक स्तर (Theological stage) : इस स्तर में समस्त चीजों को ईश्वर के प्रतिरूप के रूप में या किन्हीं अलौकिक प्राणियों की तात्कालिक क्रियाओं के परिणाम के रूप में समझा गया। इस अवस्था में मानव के मस्तिष्क का विकास इतना नहीं हो पाया कि वे अपने आसपास की घटनाओं को समझ सके। स्वस्थ बीमारियां, तूफान, आंधी, वर्षा सभी के कारण पराभौतिक शक्तियों में निहित मानकर चलते हैं। धार्मिक स्तर की तीन अवस्थाएं हैं -

a) जीवित सत्तावाद : इस अवस्था में मानव मस्तिष्क का विकास अल्प होता है। इस अवस्था में व्यक्ति प्रत्येक जड़ अथवा चेतना वस्तु में जीवन को स्वीकार करता है। जादू-टोना तथा टोटमवाद से प्रभावित सामाजिक गतिविधियां इस समाज की विशेषताएं हैं।

(b) बहुदेववादी अवस्था : इस अवस्था में मानवीय चेतना के अधिक संगठित होने से विकसित होता है। जिसमें प्रत्येक वस्तु में सत्ता के स्थान पर प्रत्येक प्राकृतिक शक्ति को एक मूर्ति (मानव के समान) देवता में निहित मान लिया जाता है।

(c) अद्वैतवाद : इस अवस्था में कॉम्टे यह स्वीकार करते हैं कि अलग-अलग प्रकार की घटनाओं के पीछे विभिन्न देवी-देवताओं को कार्य कारण के रूप में स्वीकार करने के कुछ समय पश्चात् व्यक्ति में यह विश्वास होने लगता है कि उसके समस्त व्यवहारों का संचालन विभिन्न देवी-देवताओं से न होकर किसी एक केन्द्रित शक्ति अथवा सर्वशक्तिमान ईश्वर की इच्छा से ही होता है।

(2) तात्विक अथवा अमूर्त स्तर (Metaphysical stage)

चिन्तन की यह दूसरी अवस्था संक्रमणकालीन अवस्था है। इस अवस्था में ईश्वर को मूर्त रूप में नहीं अपितु अमूर्त या निराकार रूप में विवेचित किया गया। ईश्वर का विचार के रूप में शाश्वत अस्तित्व स्थापित किया गया जो समस्त घटनाओं का नियामक है। इस अवस्था की सबसे बड़ी विशेषताएं हैं —

(i) घटनाओं में दैवी शक्ति के अस्तित्व में विश्वास के स्थान पर विचार के रूप में अस्तित्व और घटनाओं का विवेचन।

(ii) ईश्वरीय शक्ति में अन्धविश्वास के स्थान पर उसके बारे में तर्क-वितर्क का प्रारम्भ होना जिसके परिणाम स्वरूप ही केन्द्रीयक अवस्था में ईश्वर एवं ईश्वर तथा मानव के बीच मध्यस्थों (पादरी) का पतन हुआ।

③ प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक स्तर (Scientific or Positive stage) :- उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से वैज्ञानिक अवस्था का विकास होना शुरू हुआ। यह तीसरी अवस्था विज्ञान या प्रत्यक्षवादी अवस्था है। जब व्यक्ति तात्विक विचारों को छोड़कर निरीक्षण और तर्क के आधार पर इस संसार की घटनाओं को समझने और परिभाषित करने लगता है तब भी वैज्ञानिक या प्रत्यक्षात्मक स्तर में उसका प्रवेश होता है।

इस अवस्था में अवलोकन ने कल्पना को विस्थापित कर दिया तथा सभी सैद्धान्तिक विचार प्रत्यक्षात्मक हो गए। अर्थात् सत्य का निरूपण प्रत्यक्ष तथ्यों के निरीक्षण पर आधारित हो गया। यह अवस्था औद्योगिक प्रशासकों एवं वैज्ञानिकों के प्रभाव एवं प्रमुख में है।

काम्टे का मत है कि मानव चिन्तन की प्रत्येक अवस्था का विकास अनिवार्य रूप से अपनी पूर्ववर्ती अवस्था से ही होता है। एक अवस्था के पूरे होने के बाद ही दूसरी अवस्था का विकास होता है। काम्टे का विचार है कि सामाजिक जीवन का विकास उसी तरह से होता है, जिस तरह मानव चिंतन में क्रमिक परिवर्तन होते हैं।